

Pastor's Page

Greetings!

The intense winter which had gone missing suddenly surfaced as if to remind us that the season has not all lost its flavour. Likewise the Word of God is forever constant. It does not change. Last week Br. Jose Thomas so aptly reminded about our theme of the year. In fact, more than a theme, it is transformation which God wants to see in every believer's life. Stagnancy in spiritual life leads to complete decay of life. We are challenged as a believer in Christ to be like Him because:

1. We are 'the' people of God (1 Pet. 2:10) - God has made us - who were nobody, His people. God is our Father and we are His children. We have rights as His sons and daughters. Hence we must endeavour to live like His people each day.

2. We have received mercy (1 Pet. 2:10) - God's mercy was neither upon us nor in our lives yet now it is has come to us through Christ. It is strictly God given and has nothing to do with our efforts or abilities. Thus we should be witnesses of God's mercy by being merciful towards others, like Christ.

3. We have to abstain from fleshly lust (1 Pet. 2: 11) - We are created as sexual beings and sex is gift of God. Hence sexuality must be handled with great care. We need to constantly keep our sexuality especially in our relationship with the opposite sex under God's scanner. The unholy, wrong motives of our sexuality wages war against our soul. It tends to cause life long suffering and ultimate destruction of lives. We have to take captive every thought to make it obedient to Christ (2 Cor. 10:5).

4. We must keep our behaviour excellent (1 Pet. 2:12) - People may talk ill, slander or oppose us in various ways. However our conduct must be excellent before the non-believers. So, they may glorify God on the day of His visitation and will be put to shame. We ought to show Christlikeness in our behaviour. We must clothe and imbibe the colour of Christ into our lives (Gal. 3:26-27).

5. We must submit to authorities (1 Pet. 2:13-14) - All authority is instituted by God. They have been instituted to punish the wrong doers. Thus we need to submit to authority for the Lord's sake. It is the will of God that by doing so we silence the ignorant talks of the foolish men (1 Pet. 2:15).

6. Our unjust suffering shows our conscience of God (1 Pet. 2:19-20) - It is commendable before God to suffer for doing right. If we are right with God, He will recompense us. Christ has set an example for us in this regard. We are called to the same kind of suffering. (1 Pet. 2:21-25)

God wants us to be like Christ so that we show Him to this lost world - so that people can come to Him, know Him, accept Him and become the people of God.

Friends it is challenging to be like Christ but since it is God's will for us, we need to be constantly recharged with the power of God through the Holy Spirit. All things are possible only through Him. Let us examine our hearts and be excited to become like Jesus day after day.

In His servitude,
The Editorial Board

पास्टर का प्रष्ट

अभिनन्दन!

जो ठण्ड खो गई थी वोह एकाएक आ गई मानो याद दिलाने की इस मौसम के तेवर अभी भी बरकरार ह। इसी तरह परमेश्वर का वचन हमेशा स्थिर रहता है। वह कभी नहीं बदलता। पिछले सप्ताह जो इस थीमस ने बहुत अच्छी तरह हमें इस साल के विषय-वास्तु को याद दिलाया। विषय-वास्तु से बड़कर, परमेश्वर हर विशावासी के जीवन में परिवर्तन देखना चाहता है। आत्मिक जीवन में निष्क्रियता पूरे जीवन को नष्ट कर देता है। हम विशावासी के लिए यह चुनौती है की हम मसीही समानता में बड़े क्योंकि:

१. हम परमेश्वर के जन है (१.पतरस २:१०) - परमेश्वर ने हमें जो कुछ नहीं थे- उन्हें अपना जन बनाया है। परमेश्वर हमारा पिता है और हम उसके बच्चे हैं। हमारे पास उसके बीटा और बेटा होने का अधिकार है। इस लिए हमारा हर दिन यह प्रयत्न होना चाहिए की उसकी प्रजा के समान जिए।

२. हमें दया मिली है (१. पतरस २:१०) - परमेश्वर की दया ना हमारे ऊपर थी और ना हमारे जीवन में। यह सिर्फ परमेश्वर की ओर से हमें मिला है और उसका हमारे प्रयास या काबिलियत से कुछ लेना देना नहीं है। इसीलिए हमें परमेश्वर की दया का गवाह बनना है दूसरों के प्रति दयावान बन कर, मसीह से समान।

३. हमें शारीरिक वासना से दूर रहना है (१ पतरस २:११) - हमें परमेश्वर ने कामी जीव बनाया गया है और यौन परमेश्वर का उपहार है। हमें लगातार खास कर के विपरीत लिंग प्रति अपने लैंगिकता को परमेश्वर के नज़र में रखना होगा। हमारे लैंगिकता के अपवित्र, गलत मनसा हमारी आत्मा के विरुद्ध युद्ध करती है। यह जीवन भर की हानि और पूर्ण विनाश ले के आती है। हमें अपने हर सोच को बंदी बना कर मसीह के प्रति आज्ञाकारी बनाना होगा (२ कुरि: १०:५)।

४. हमारा व्यवहार उत्तम होना चाहिए (१ पतरस २:१२) - लोग हमारे विषय में खराब बोल सकते हैं, अफ़वाह फैला सकते हैं और कई और तरीकों से विरोध कर सकते हैं। लेकिन गैर विशावासी लोगों के सामने हमारा व्यवहार उत्तम होना चाहिए। ताकि, वो परमेश्वर की महिमा कर सके उस दिन जब वोह आयेगा और वोह लज्जित हो। हमें मसीह को पहना और उसके रंग में रंग जाना है (गलातीयों ३:२६-२७)।

५. हम अधिकारियों के अधीन रहे (१ पतरस २:१३-१४) - सारे अधिकार परमेश्वर ने बनाए हैं। अपराधियों को सज़ा देने के लिए उन्हें बनाया गया है। इसीलिए हमें परमेश्वर के लिए अधिकारियों के अधीन रहना चाहिए। यह परमेश्वर की इच्छा है की ऐसा कर हम निर्बुद्धि लोगों के अनभिज्ञ बातों को खामोश करा दे (१ पतरस २:१५)।

६. हमारा अन्यायपूर्ण पीड़ा परमेश्वर में हमारे विवेक को दर्शाता है (१ पतरस २:१९-२०) - यदि हम पर अच्छा के कारण कोई पीड़ा अये तोह यह परमेश्वर के सामने प्रशंसनीय है। यदि हम परमेश्वर के साथ सही होंगे, तो वह उन बातों के लिए भरपाई करेगा। मसीह खुद ने हमारे लिए इस विषय में एक उदाहरण है। हमें इस प्रकार की पीड़ा सहने के लिए बुलाया गया है। (१ पतरस २:२१-२५)

परमेश्वर चाहता है की हम मसीह के समान बने ताकि इस खोए हुए संसार को हम उसे दिखा सके - ताकि लोग उसके पास अये, उसे जानें, उसे स्वीकार करे और वो परमेश्वर के जन बन जाए।

मित्रों मसीह के समान बनना चुनौतीपूर्ण है लेकिन क्योंकि यह परमेश्वर की इच्छा है, इसलिए पवित्र आत्मा के द्वारा हमें निरंतर परमेश्वर की सामर्थ से भरे रहना होगा। आए हम अपने हृदय को जांचें और दिन प्रति दिन यीशु के समान बने के लिए उत्साहित हो।

उसके दासता में,
सम्पादकीय बोर्ड

Coming Up This Week:

1. The Fasting Prayer on 22nd January will be held at the residence of Sr. Sushma, # 276/ B, Kendriya Vihar, Sector 48/B, Chandigarh. Time 11 am.
2. There will a special meeting for new contacts on Jan. 26 in the school's Music Room. Time 4 to 6pm. Refreshments will be provided.
3. There will be a two workshop on 'How to share our Faith with friends of other faiths'- Guest Speaker Acharya Vikas Massey - Jaipur. Dates 29-30 Jan, Venue- YWCA, Time 10.30 - 4pm Registration 100/- Lunch and tea will be provided. Submit your registration with Br. Inderjit

Prayer Corner:

1. Pray for our Nations security and Unity
2. Pray for FCC Churches and ministry
3. Pray for the sick
4. Pray for the special meeting for new contacts on Jan. 26



You can now directly deposit your tithe and other special donations in the FCC account using the following details.

FAITH COMMUNITY CENTRE
STATE BANK OF PATIALA
A/c No. 65000130208
IFSC Code: STBP0000240